उत्तर : श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित **'ज्योति जवाहर'** खण्डकाव्य के नायक पं० जवाहरलाल नेहरू हैं। जवाहरलाल नेहरू को प्रस्तुत खण्डकाव्य में युगावतार तथा लोकनायक के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख निम्न प्रकार किया जा सकता है—

(1) महान् व्यक्तित्व—जवाहरलाल नेहरू के विराट् व्यक्तित्व में सूरज का तेज, चाँद की सुघड़ता, सागर की गहराई तथा धरती का धैर्य था। वे भारत के भाग्य-निर्माताओं में से एक थे। भारत के राष्ट्रभक्तों की शृंखला में उनका नाम अमर है।

(2) वीर देशभक्त तथा स्वतन्त्रता के पुजारी—उच्चकुल में उत्पन्न होने पर भी जवाहरलाल नेहरू ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अनेक कष्टों को सहन किया। वे हृदय से कोमल और उदार तो अवश्य थे, किन्तु कायर बिल्कुल नहीं थे। अतः शत्रु के सामने उनको झुकना स्वीकार नहीं था। उनके व्यक्तित्व की इन विशेषताओं को कवि ने स्वयं उन्हीं के मुख से इस प्रकार कहलाया है—

मुझमें कोमलता है लेकिन कायरता मेरा मर्म नहीं।
बैरी के सन्मुख झुक जाना, मेरे जीवन का धर्म नहीं।।

उनके जीवन में इस वीरत्व के समावेश का मुख्य कारण यह था कि उनका जीवन वीर शिवाजी, राणा प्रताप आदि वीरों के चरित्र से प्रभावित हुआ था। वे सच्चे देशभक्तों के समान संघर्षमय जीवन व्यतीत करना जानते थे। इस सम्बन्ध में कवि का कथन है—

संघर्षों में पैदा होना, संघर्षों में जीना-मरना।
जिनके आगे बाधाओं को, हरदम पड़ता पानी भरना।।

(3) भारतीय संस्कृति के पोषक—जवाहरलाल नेहरू के चरित्र पर भारतवर्ष के प्राचीन गौरव की छाप है। उन्होंने महावीर, गौतम तथा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई अहिंसा की नीति का पालन किया। वे गांधीजी के स्वप्नों का भारत बनाने में ही जीवनभर तल्लीन रहे। भारतवर्ष के शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि महान् दार्शनिकों की वाणी को उन्होंने ध्यानपूर्वक सुना। भारतीय साहित्यकारों कालिदास, भवभूति आदि तथा भारतवर्ष के शीर्षस्थ नेता अकबर, चाँदबीबी, सुभाषचन्द्र बोस, टीपू आदि के चरित्रों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

(4) सर्वप्रिय लोकनायक—जवाहरलाल नेहरू को भारतीय जनता ने असीम प्यार दिया। कवि ने जवाहरलाल नेहरू को युगावतार तथा लोकनायक के रूप में स्वीकार किया है। लोकनायक वही हो सकता है, जिसके हृदय में सम्पूर्ण जनता के सुख-दुःख की अनुभूति हो। भारतवर्ष का कोई ऐसा प्रान्त नहीं, जिसने जवाहरलाल नेहरू पर सर्वस्व न्योछावर न किया हो। गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि सभी प्रान्तों के कोने-कोने में लोकनायक का विराट् व्यक्तित्व व्याप्त है। जवाहरलाल नेहरू को युग का अवतार मानते हुए कवि ने इस प्रकार कहा है—

मथुरा वृन्दावन अवधपुरी की, गली-गली में बात चली।
फिर नया रूप धर कर उतरा, द्वापर त्रेता का महाबली।।

वे लोकनायक यूँ ही नहीं हैं। उनके व्यक्तित्व को प्रकृति ने भी खूब सँवारा है। सूरज-चाँद, हिमालय और सागर ने उनके व्यक्तित्व को नए प्रतिमान प्रदान किए हैं, जिसका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

सूरज से लेकर ज्योति, चाँद से लेकर सुधराई तन की।
हिमगिरि से लेकर स्वाभिमान, सागर से गहराई मन की॥

(5) नवराष्ट्र के निर्माणकर्त्ता—भारतवर्ष को स्वतन्त्रता दिलाने के पश्चात् नवराष्ट्र का निर्माण करनेवालों में जवाहरलाल नेहरू अग्रगण्य हैं। देश का उद्धार करने के लिए उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं को आरम्भ किया। गुट-निरपेक्षता, निरस्त्रीकरण तथा विश्व-शान्ति की स्थापना आदि कार्यों के फलस्वरूप उनका व्यक्तित्व चमक उठा। वे जाति-पाँति के बन्धनों को तोड़ने में विश्वास रखते थे। जवाहरलाल नेहरू सभी धर्मों की एकता में विश्वास रखकर देश को निरन्तर प्रगतिशील बनाना चाहते थे।

(6) विश्व-शान्ति के अग्रदूत—जवाहरलाल नेहरू आजीवन विश्व-शान्ति की स्थापना के कार्य में लगे रहे। उनके द्वारा निर्धारित तटस्थता, निशस्त्रीकरण, पंचशील आदि की नीति शान्ति स्थापना से सम्बन्धित प्रयासों के ही उदाहरण हैं, जिनके लिए वे अन्त तक प्रयास करते रहे।

(7) युद्ध-विरोधी—जवाहरलाल नेहरू भी अशोक के समान युद्ध-विरोधी थे। वे अहिंसा के पुजारी थे, परन्तु अत्याचारी के चरणों पर झुकने को उन्होंने हिंसा ही माना और उसके सिर को कुचलने को उन्होंने सदैव अहिंसा ही कहा—

अत्याचारी के चरणों पर झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना, जो हिंसा नहीं अहिंसा है॥

(8) राष्ट्रोत्थान के पक्षपाती—जवाहरलाल नेहरू ने स्वतन्त्र-भारत का नव-निर्माण किया। उन्होंने भारतवर्ष को स्वावलम्बी राष्ट्र बनाने का भरसक प्रयास किया। पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर उन्होंने भारत का निरन्तर उत्थान किया। राष्ट्रीय उत्पादन में उनकी अत्यधिक रुचि थी।

इस प्रकार 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व एक राष्ट्रप्रेमी, मानवतावादी, युद्ध-विरोधी, सत्य एवं अहिंसा के पुजारी तथा महान् लोकनायक के रूप में उभरकर सामने आया है।

अथवा 'ज्योति-जवाहर' खण्डकाव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए। *(2020 MG)*

उत्तर : श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' ने लोकनायक जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व को भावात्मक एकता का प्रतीक मानते हुए प्रस्तुत **'ज्योति जवाहर'** खण्डकाव्य का सृजन किया है। इसमें भारतवर्ष के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के गौरव का वर्णन भी कवि ने भावात्मक एकता की दृष्टि से ही किया है। ये सभी राज्य भारतवर्ष की महिमा को ही व्यक्त करते हैं। इस भावना को व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

माथे पर टीका लगा दिया, हल्दी की घाटी ने
जो मन्त्र दिया मर मिटने का, आजादी की परिपाटी ने।
बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं॥

स्पष्ट है कि कविवर राही ने प्रस्तुत खण्डकाव्य में मुख्य रूप से नेहरूजी के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण किया है। इस चित्रण में उन्होंने भारतवर्ष की भावात्मक एकता को मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है। कवि का प्रतिपाद्य विषय यही है।

इस खण्डकाव्य में कवि, नेहरूजी के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए, भारत की राष्ट्रीय एकता पर आधारित चिरकालीन भावना को स्पष्ट करना चाहते हैं। इस प्रकार कवि ने नेहरूजी के व्यक्तित्व में राष्ट्रीय भावात्मक एकता तथा उनके केन्द्रीय स्वरूप का समायोजन किया है। कवि को इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है।

प्रश्न 4. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। ***(2007)***

उत्तर : 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में कवि 'राही' ने बताया है कि भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति ने किस प्रकार पं० जवाहरलाल नेहरू के महान् व्यक्तित्व का निर्माण किया और फिर किस प्रकार से नेहरूजी ने भारत का नव-निर्माण करते हुए उसे एक ज्योति पुंज के रूप में नई दिशा और पहचान दी। नेहरूजी के चरित्र और व्यक्तित्व को अतिशयता प्रदान करते हुए कवि ने भारत और जवाहरलाल नेहरू को एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है—

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुझको पाया।
जब तुझको देखा नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।

कवि ने भारत की राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत का गुणगान नेहरूजी के ज्योतिस्वरूप भावात्मक व्यक्तित्व के आलोक में किया है, जिसमें उसे पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है; अतः उन्हीं ज्योतिस्वरूप जवाहरलाल नेहरू के नाम पर इस खण्डकाव्य का नामकरण सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण ही है।